International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 03-03-2025, Accepted: 02-04-2025, Published: 18-04-2025
Volume 11, Issue 2, 2025, Page No. 9-12

बोकार समाज और उसकी लोक मान्यताएँ

डॉ. पासांग रुकू
सहायक प्राध्यापक, दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र, राजीव गाँधी विश्वविद्यालय, रोनो हिल्स अरुणाचल प्रदेश, भारत

सारांश
मनुष्य अपने कार्य की सिद्धि अथवा असिद्धि का संबंध किसी विशेष कार्य–व्यापार से जोड़ता है और इसी संबंध को शकुन–अपशकुन के रूप में माना गया है। भारतीय विद्वान डॉ. सतेन्द्र ने लोकविश्वास के संदर्भ में कहा है कि– 'लोकधर्म और लोकविश्वास परस्पर घनिष्ठ रूप से संबंधित है। प्रत्येक प्रकार के लोकविश्वासों का संग्रह करना अपेक्षित है। ये विश्वास प्रत्येक क्षेत्र में प्रचलित है। उन्हें अभिप्राय–अनुक्रमणिका (मोटीफ इंडेक्स) के रूप में वर्गीकृत करने की आवश्यकता है।' लोक अनुभवों से से अर्जित स्थापनाओं या परिणामों के लोकमान्य होने से जो लोकविश्वास हर युग में बनते हैं, उनका संबंध तत्कालीन विशिष्ट परिस्थितियों से रहता है और जब वैसी ही परिस्थितियाँ आती हैं तब उसे लोकसिद्ध विश्वास के रूप में मानते हैं।
लोकमान्यताएँ बोकार लोकजीवन में ही नहीं बल्कि विश्व के प्रत्येक क्षेत्र में विविध रूप में प्रचलित है। लोकजीवन के विश्वास वहाँ के धर्म पर आधारित होते हैं। बोकार समुदाय में लोक मान्यताएँ, विश्वास, शकुन–अपशकुन, पुनर्जन्म, भूत–प्रेत, देवई–देवता एवं उनकी पूजा पद्धति आदि का उल्लेख देखने को मिलता है। जैसे कि बोकार जनजाति की मान्यताओं के अनुसार घर में साँप का घुस जाना, कुत्ते का रोना, सूअर का चिचियाना, चूहों का रोना और उल्लू का बोलना आदि अशुभ माना जाता है।
इस शोध पत्र में अरुणाचल के बोकर समुदाय के लोकजीवन तथा उनकी लोकमान्यताओं का विस्तृत विश्लेषण एवं विवेचना किया जाएगा।

मूल शब्दः बोकार, समुदाय, जनजाति, मान्यताएँ, लोक, विश्वास

पूर्वोत्तर में स्थित अरुणाचल प्रदेश जनजातीय बहुल एक राज्य है। यह नागालैंड और असम के साथ–साथ भूटान, म्यांमार और तिब्बत के साथ अपनी सीमा सांझा करता है। इसकी राजधानी ईटानगर है। इस राज्य को 'उगते सूरज की भूमि' भी कहा जाता है। यह भारत की धरती पर सबसे पहले उगते सूरज को नमस्कार करने वाला राज्य है। इस प्रदेश में छब्बीस प्रमुख जनजातियाँ निवास करती हैं। प्रत्येक जनजाति की अपनी सामाजिक–सांस्कृतिक, धार्मिक एवं परंपरा हैं। इनके पारंपरिक पहनावा से पता लगाया जाता है कि वे किस समुदाय के हैं अथवा अरुणाचल के किस जिले या क्षेत्र के निवासी है। अधिकांश जनजातीय समुदाय प्रकृति पूजक हैं जो इस राज्य की सांस्कृतिक विविधता को और भी समृद्ध बनाता है। यद्यपि पश्चिम कामेंग और तावांग जिलों में निवास करने वाली मोनपा, खामती और मेनबा आदि जनजातियाँ बौद्ध धर्म को मानती हैं। जिनकी अपनी संस्कृति एवं परंपरा है।
मोपिन, न्योकुम, सोलुंग, सी दोन्यी, लोसार, द्री, चलो–लोकू तथा पंगसौ आदि अरुणाचल प्रदेश का मुख्य त्यौहार हैं। अधिकांश जनजातीय त्योहारों में पशु बलि दी जाती है।
अरुणाचल प्रदेश के प्रमुख सांस्कृतिक समूहों को तीन उपशीर्षों में वर्गीकृत किया जा सकता है। जिनमें पहले आदी, गालो, न्यीशी, तागीन और अपातानी जनजातियाँ हैं। इस समूह के लोग सूर्य और चंद्रमा की पूजा करते हैं।
दूसरा समूह मोनपा, खामती और शेरदुकपेन आदि। ये खुद को बौद्ध धर्म के महायान और हीनयान शाखा के मानते हैं। तीसरे समूह में नोक्टे, ताङसा और वाङचो आदि जनजातियाँ शामिल हैं, जो खुदको वैष्णववाद और बौद्ध धर्म के अनुयायी बताते हैं।
भाषा की दृष्टि से अरुणाचल प्रदेश एक भाषाई विविधता वाले राज्य हैं। जिनमें तिब्बती–बर्मन भाषा परिवार की एक सौ से अधिक बोलियाँ बोली जाती हैं।
बोकार समुदाय अरुणाचल प्रदेश के 'आदी' जनजाति की एक उप–जनजाति है। यह समुदाय स्वयं को आबो तानी का वंशज मानता है। बोकार जनजाति अरुणाचल प्रदेश के ऊपरी क्षेत्र में भारत और तिब्बत की सीमा पर स्थित शी–योमी जिले में निवास करती है। भारतीय जनगणना रिपोर्ट 2011 के अनुसार इस समुदाय की जनसंख्या लगभग दस हजार हैं। भौगोलिक दृष्टि से देखा जाए तो बोकार समुदाय के लोग शी–योमी जिले के दो अलग–अलग भागों उत्तर और दक्षिण में निवास करते हैं– 'काररांग' एवं 'कारगु पूङयींग'।
पहाड़ों की ऊपरी एवं बर्फीले क्षेत्र में रहने वाली बोकार जनजाति को 'काररांग' कहा जाता है। पहाड़ों की तलहटी में रहने वाले बोकार को 'कारगु'। ऊपरी क्षेत्र में बोकार समुदाय के लगभग एक सौ गाँव हैं। जिनमें तादाङ देगे, मोनीगोङ, दीदु, रामरुङ, कार ल, पोङ त, हेमी, गेचिङ, शीत और पांगरी आदि हैं। इन गाँवों में 50 से अधिक बोकार जनजाति के अलग–अलग गोत्र के लोग निवास करते हैं। जो इस प्रकार है– साजी, दूङन्यो, तामांग, हेमी और हेदो इत्यादि।
तलहटी इलाके में बोकार जनजाति के लगभग 17 गाँव हैं– कारो, पीदी, लुङ त, हिरोङ और पाबुङयीङ आदि। इन गाँवों में बोकार समुदाय के सात से अधिक उप–जातियाँ निवास करती हैं। जिनमें बुन्यी, बुराक, पूगयीङ और याजो आदि के गोत्र पाए जाते हैं। इसके अलावा बोकार समुदाय के लोग शी–योमी जिले के उप–भाग क्षेत्र 'तातो' और 'मेचूखा' में भी पाए जाते हैं। इस समुदाय द्वारा बोली जाने वाली भाषा का नाम बोकार ही कहलाता है। इस भाषा का मूल स्रोत सिनो तिब्बती भाषा परिवार से माना जाता है।
अरुणाचल प्रदेश की अन्य जनजातियों की तरह बोकार समुदाय की अपनी विशेष पारंपरिक एवं सांस्कृतिक पहचान है, जो बोकार जनजीवन का आधार है। जिनमें बोकार समुदाय के रहन–सहन, खान–पान, धार्मिक आस्थाएँ एवं मान्यताएँ आदि समाहित हैं। इस समुदाय के पास लिखित साहित्य का अभाव है लेकिन एक समृद्ध लोकसाहित्य की वाचिक परंपरा मौजूद है। जिनमें लोकगीत, लोककथाएँ, लोकगाथाएँ, लोकोक्ति और लोक सुभाषित आदि शामिल हैं, जो पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होते रहते हैं। कथा और गीत के माध्यम से बोकार समुदाय के बड़े बुजुर्ग अपने

समुदाय के युवा पीढ़ीयों को जीवन मूल्यों का ज्ञान एवं उपदेश देते हैं।

अन्य जनजातीय समुदाय की तरह बोकार समुदाय में भी शकुन–अपशकुन की कई मान्यताएँ हैं। उदाहरण के लिए–

बोकार समुदाय की मान्यता है कि इस संसार में जीतने भी इंसान को नुकसान पहुँचाने वाली आत्माएँ और जीव–जंतुएँ हैं वे सब 'रोबो' के वंशज हैं। इस समुदाय की एक लोक कथा के अनुसार 'रोबो' और 'नीबो' दोनों भाई थे परंतु 'नीबो' की चतुराई पर 'रोबो' हमेशा ईर्ष्या करता था। इसलिए वे दोनों आपस में एक दूसरे को धोखा देते थे। इस क्रम में 'रोबो' खुदको हमेशा नुकसान पहुँचाता था और हार जाता था। तब से लेकर आज तक 'रोबो' के वंश भी 'नीबो' की संतान का पीछा करते आ रहे हैं मगर आज तलक दोनों के वंशजों में मेल नहीं हो पाया, इसलिए दुश्मन बनकर खून चूसने के लिए पीछा करते हैं।

एक और बोकार लोककथा के अनुसार 'रोबो' के वंश में से सबसे बुरा 'ओपोम' एक भूत है, जो घने बादलों और घने वृक्षों के नीचे रहता है और इंसानों का अपहरण करता है। इस जनजाति का विश्वास है कि 'ओपोम' इंसानों को तंग करने के लिए लोगों को अपहरण करके उन्हें जंगलों में ले जाता है और उसे परेशान करता है, इसलिए जब गाँव का कोई व्यक्ति जंगलों में भटक जाता है या गुम हो जाता है तो सबसे पहले विशाल वृक्षों के नीचे या फिर घने बादलों से ढके बड़े पेड़ के ऊपर ढूंढते हैं, और उन्हीं वृक्षों के नीचे 'ओपोम' की पूजा करते हैं। इस पूजा में 'ओपोम' से विनती की जाती है, साथ में वादा किया जाता है कि खोया हुआ व्यक्ति को वापस भेज दो उसके बदले में सुअर, बकरी, या मिथुन आदि की बलि दी जाएगी। बोकार समाज का विश्वास है कि यदि 'ओपोम' इस बलि के प्रस्ताव से खुश हो जाता है तो अपहरण किया हुआ व्यक्ति को घर वापस भेज दिया जाता है।

उक्त मान्यता के अतिरिक्त बोकार समुदाय में प्रचलित अन्य प्रसिद्ध लोकमान्यताएँ इस प्रकार हैं–

आधी रातको कुत्ते का रोनाः बोकार समुदाय का विश्वास है कि भूत–प्रेत और अनहोनी दुर्घटना का आभास सबसे पहले घर के जानवरों को होता है। इसलिए इस समुदाय का मानना है कि आधी रात को जब कुत्ते भौंकते हुए रोते हैं तो वह अपने मालिक की आत्मा को देखकर रोता है। मान्यता है कि घर के सदस्यों में से किसी की मृत्यु होने वाली है या कोई अनहोनी दुर्घटना का संकेत है। जब कुत्ता ऐसा करता है तो उस कुत्ते को पास बुलाकर उस पर मंत्र उच्चारण करते हुए उससे कहा जाता है कि – होश में आ जाओ हम सब सुरक्षित हैं, तुम रोना नहीं।

रात को मुर्गे का भांग देनाः आधी रात को जब घर का मुर्गा भांग देता है तो अशुभ माना जाता है। लोक विश्वास है कि वह घर जलने का संकेत देता है। उनके अनुसार जब मुर्गा आधी रात को भांग देता है तो इसका अर्थ होता है कि पड़ोसी के घर में आग लगने वाली है और उसका घर जलने वाला है। यदि किसी मुर्गे ने इसका जबाब दिया तो इसका मतलब है कि जिस मुर्गा ने पहले भांग दिया था उसके मालिक के घर में आग लगने वाली है। इस दुर्घटना से बचने के लिए सबसे पहले उन मुर्गों को पकड़कर कोयले से उसके चोंच को रंग कर बाल्टी भर पानी उस पर फैंक दिया जाता है। तत्पश्चात 'मरो' नामक अग्नि भूत को भगाने के लिए पूजा की जाती है।

सूअर का चिचियानाः सूअर जब चिचियाते हुए घर के नीचे यहाँ–वहाँ भागने लगता है तो उसे अशुभ माना जाता है। ऐसा माना जाता है कि कोई भूत प्रेत सूअर के सामने से गुजरा है।

साँप का घर में आनाः बोकार समुदाय में घर में साँप का घुसना या रहना बहुत अशुभ माना जाता है। यदि सांप घर पर आकर रहता है तो माना जाता है कि 'उयू' (शैतान) ने उसे संदेश वाहक बनाकर भेजा है और उसे बलि चाहिए। यदि बलि नहीं दी जाती है तो घर के किसी सदस्य की आत्मा वह ले जाता है। इससे बचने के लिए पुजारी को बुलाकर यह पता लगवाया जाता है कि वह किस पशु की बलि का मांग कर रहा है। पुजारी मंत्र पढ़कर चूजे को काटता है और उसके कलेजे को निकालकर देखता है और बताता है कि उयू किस पशु की बलि का मांग कर रहा है और माँग के अनुसार ही बलि दी जाती है। पूजा के बाद पुजारी द्वारा कुछ निर्देशों का पालन करने के लिए कहा जाता है। जिनका पालन ठीक से नहीं करने पर बलि एवं पूजा व्यर्थ हो जाते हैं।

रास्ते में साँप दिखनाः बोकार समाज में रास्ते में 'बिरूलीङ' यानी बिना जहर वाले लाल साँप का दिखना अशुभ है। मान्यता है कि यदि लाल साँप रास्ते पर दिख जाए तो व्यक्ति को किसी रिश्तेदार की मृत्यु में शामिल होना पड़ता है। यदि साँप रास्ते के नीचे दिखे तो अपने ही घर में कुछ अनहोनी घटना घटती है। बोकार लोकविश्वास के अनुसार 'बिरूलीङ'(लाल साँप) आत्मा या पुजारी का संदेश वाहक होता है। वह होने वाली दुर्घटनाओं का समाचार इंसानों तक पहुँचाता है। बोकार समुदाय में लाल साँप दिखने पर घर वापस लौटकर 'उयू ओरोम' (प्रेतात्मा) की पूजा करने का चलन है।

उल्लू का बोलनाः उल्लू का बोलना बोकार समाज में अशुभ माना जाता है। मान्यता है कि यदि उल्लू बोलता है तो गाँव में कोई व्यक्ति फाँसी लगाकर आत्महत्या करता है। यदि किसी व्यक्ति के सामने उल्लू बोलता है तो यह संकेत माना जाता है कि वह किसी व्यक्ति की अंतिम संस्कार में शामिल होने वाला है। यही कारण है कि बोकार जनजाति में जब कोई फाँसी लगाकर आत्महत्या करता है तो उसे 'ताङपू सी न' यानी उल्लू का नाम दिया जाता है। ऐसी दुर्घटना से बचने के लिए 'ताङपू सी न' की पूजा की जाती है।

चूहों का रोनाः बोकार लोकमान्यताओं के अनुसार घर के पश्चिम भाग 'पापङ' में चूहे रोता है तो किसी रिश्तेदार की आत्मा के रोने का संकेत है और पूर्वी भाग 'कोङदोङ' में रोता है तो घर के ही सदस्य की आत्मा रो रही है।

स्वप्न संबंधित मान्यताएँः शुभमान्यताओं में केवल स्वप्नों में देखे गए प्रतीकों का उल्लेख बोकार लोकगीतों में देखने को मिलता है। इस समुदाय के अनुसार यदि स्वप्न में कोई व्यक्ति मछलियाँ पकड़ता है तो उसे धन राशि प्राप्त होती है। यदि नई नवेली दुल्हन के स्वप्न में धनुष, तीर और चाकू आदि आते हैं संतान प्राप्ति का शुभ संकेत माना जाता है।

मृत्यु संबंधित मान्यताएँः बोकार समुदाय की मान्यता के अनुसार मृत्यु कई प्रकार के होते हैं। जैसे –

तालङ सी नः बोकार समुदाय के अनुसार जिनकी मृत्यु का कारण हत्या होता है तो उसे 'तालङ सी न' कहा जाता है। इस समुदाय का मानना हैं कि यदि किसी व्यक्ति की मृत्यु हत्या के कारण होती है तो उसकी आत्मा हमेशा बैचेन रहती है और इंसान को हानी पहुँचाना उसका उद्देश्य बन जाता है क्योंकि इंसान को जीवित देखकर, उसे ईर्ष्या होती है। इसलिए यदि कोई व्यक्ति इस प्रकार की मृत्यु संस्कार में शामिल होता है तो घर लौटने से पहले नदी किनारे जाकर मुट्ठी भर हरी घास काटकर उसे पानी में भिगोकर मंत्र पढ़ते हुए अपने शरीर पर

छिड़कता है और खुदको शुद्ध करता है। इस समुदाय का विश्वास है कि ऐसा करने से मृतक की बैचेनी आत्मा उस व्यक्ति और उसके परिवार वालों को परेशान नहीं करती है। इसलिए सबसे पहले मृतक के घर जाकर उनके परिवारों के दुरूख में शामिल होकर मृतक से उनकी मृत्यु का कारण पूछते हुए 'कापबेन' यानी शोक गीत गाया जाता है और मृतक की अंतिम संस्कार के बाद घर लौटने समय उसकी बैचेन आत्मा से बचने के लिए मंत्र पढ़ते हुए जाते हैं। उदाहरण के लिए लोकगीत की पंक्तियाँ इस प्रकार है–
ओ लोबो !

एक सज्जन की हत्या हुई है
उनकी मृत्यु संस्कार में मैं शामिल हुआ हूँ
अब मैं घर लौट रहा हूँ
तुम भी वापस मेरे साथ चल ओ मेरी आत्मा !
जो भी अशुद्ध और अपवित्र हैं
वे मेरे शरीर से निकल जाएँ
मैं अपने शरीर को पवित्र झरना के पानी से
शुद्ध किया है
मेरे और मेरे परिवार पर
किसी आत्मा की साया न पड़ने देना...।

रिरूमी सी नः बोकार समुदाय में यदि किसी व्यक्ति की मृत्यु पहाड़ों से गिरकर या व्यक्ति के ऊपर पत्थर या फिर बड़े वृक्ष गिरने पर होती है तो उसे असामान्य मृत्यु माना जाता है। इस मृत्यु को बोकार शब्दावली में 'रिरूमी' कहा जाता है। इस समुदाय की मान्यता है कि 'रिरूमी उयू' यानी 'पहाड़ों का देवता' की पूजा समय–समय पर ठीक से नहीं करने और बलि नहीं चढ़ाने के कारण वह क्रोध में आकार इंसान का नाश कर देता है। इसलिए इस प्रकार की मृत्यु को भी वे हत्या के श्रेणी में रखते हैं। ऐसी घटना से बचने के लिए 'रिरूमी' की पूजा की जाती है और समय समय पर उसके नाम पर पशु बलि दी जाती है।

बुरु सी नः जिस व्यक्ति की मौत नदी में डूबने के कारण होती है तो उसे 'बुरु सी' न का नाम दिया जाता है। बोकार लोक–विश्वास के अनुसार 'बुरु' नदी में रहने वाला एक अनिष्ट देवता है, जो इंसानों की जान के पीछे हमेशा लगा रहता है। यह देवता पूज्य नहीं है, इसलिए वह इंसानों को परेशान करता है। जो व्यक्ति नदी में डूबकर मर जाता है उसकी आत्मा हमेशा इंसानों का पीछा करती है। बोकार जनजाति के लोग बुरु की बुरी नजर और अशांत आत्माओं से बचने के लिए 'न्यूबू हीनाम' नामक पूजा करते हैं जिनमें 'बुरु'(अनिष्ट देवता) को अपनी जगह शांत रहने की चेतावनी दी जाती है। इस समुदाय का मानना है कि यदि इंसान नदी में डूबकर मर जाता है तो उन्हें बुरु द्वारा हत्या माना जाता है।

न्यीङपोङ सी नः बोकार समाज में जिन स्त्रियों की मौत गर्भवती की अवस्था में हो जाती है तो उन्हें 'न्यीङपोङ सी न' का नाम दिया जाता है। जिन महिलाओं की मृत्यु गर्भवती आवस्था में होती है, उनकी अंतिम संस्कार में गर्भवती महिलाओं और दुल्हनों का जाना वर्जित है। मान्यता के अनुसार 'न्यीङपोङ' एक असन्तुष्ट डायन है जो गर्भवती महिला को हानी पहुँचाती है। इस डायन से बचने के लिए बोकार समुदाय के लोग गर्भवती स्त्री और बच्चे की सलामती के लिए 'न्यीङपोङ उयू' यानी डायन की पूजा करते हैं।

ताङपू सी नः इस जनजाति में यदि कोई व्यक्ति अपने आप फाँसी लगाकर खुदखुशी कर लेता है तो उसे 'ताङपू सी न' का नाम दिया जाता है। इस समुदाय में उल्लू पक्षी को 'ताङपू' कहा जाता है। इसे वे सबसे मूर्ख पक्षी मानते हैं। बोकार जनजाति का मानना है कि खुदखुशी करना सबसे मूर्खता, डरपोक और कायरता का काम होता है, इसलिए ऐसी मौत को 'ताङपू' कहा जाता है।

यापि सी नः बोकार समाज में जिन बच्चों की असाधारण मौत हो जाती है या माँ के कोख में ही गुजर जाते हैं तो उसे 'यापि सी न' कहा जाता है। उनकी मान्यता है कि 'यापि' एक बुरी आत्मा है जो पक्षी का रूप धारण करके बच्चों की आत्मा को उड़ाकर ले जाती है। इसलिए इस समुदाय के लोग नवजात शिशु को लेकर घने जंगलों में जाने तथा आधी रात को कहीं निकलने से कतराते हैं। इस तरह की असामान्य मृत्यु संस्कारों में गीत गाकर मृतक की आत्मा से सवाल करने का चलन बोकार समुदाय में पाया जाता है–

ओ मिजिक सज्जन!
तुम्हारी मृत्यु कैसे हुई
तुम्हें क्या हुआ
तुम्हारी मृत्यु क्यों हुई
क्या यह काम दुष्ट आत्मा का है
या भूत– प्रेत का
किसी ने जादू–टोना किया
या किसी की बुरी नज़र लगी
माता– पिता का आशीर्वाद यहीं तक था ?
ओ मिजिक !
तुम्हारी मृत्यु कैसी हुई ...?

सीदीः गे सीसु नरू बोकार समुदाय में जो व्यक्ति साधारण रूप से वृद्धावस्था में और किसी बीमारी के कारण गुजर जाता है तो उसे 'सीदीरू गे सीसु न' कहा जाता है। बोकार जनजाति का विश्वास है कि, इस प्रकार की मृत्यु माता–पिता का आशीर्वाद और 'आ न दूङन्यी' सृष्टिकर्ता का दिया हुआ भोजन–पानी समाप्त हो जाने के कारण होती है। इनकी आत्माएँ इंसान को परेशान नहीं करती हैं। इसलिए इस प्रकार की मृत्यु संस्कारों पर मृतक के जीवनकाल में किए गए अच्छे कर्मों का वर्णन करते हुए विदाई दी जाती है। उदाहरण के लिए गीत की पंक्तियाँ इस प्रकार है–

तुम इस दुनिया से विदा ले रहे हो
हम सबसे विदा ले रहे हो
आप बहुत भले और नेक थे
हमें तुम्हारी बहुत याद आएगी
माँ–पिता का आशीर्वाद
यहीं तक था
अब हम तुम्हें दोङन्यीदूपोङलो को सौंपते हैं
तुम एक वीर योद्धा और शिकारी थे
हमें तुम्हारी बहुत याद आएगी
माँ–पिता का आशीर्वाद
शायद खत्म हो गए हैं
अब हम तुम्हें दोङन्यीदूपोङलो को सौंपते हैं...।

दुमयक यकनामः बोकार समाज में घर के बड़े–बुजुर्ग और माता–पिता के गुजर जाने के बाद 'दुमयक यकनाम' नामक एक संस्कार का पालन किया जाता है। मान्यता है कि इस संस्कार को पूरी नहीं करने पर मृतक की आत्मा अपने बच्चों के साथ घर पर ही रह जाती है, इसलिए मृतक की आत्मा की विदाइ में इसे

पालन किया जाता है। इस संस्कार को मृतक की अंतिम संस्कार के तीन दिन बाद पालन किया जाता है। 'दुमयक यकनाम' संस्कार में पुजारी द्वारा मंत्रोच्चारित कर मृतक के बेटे और बेटियों के सिर के सबसे ऊपरी हिस्से के कुछ बालों को गाँठ बनाकर बाँध दिया जाता है। मान्यता के अनुसार बालों को बाँधने से जीवित व्यक्तियों की आत्माएँ मृतात्मा से नहीं मिल पाती है। इन संस्कारों के पालन के दौरान कुछ दिनों या महीनों तक अनजान लोगों से बातचीत करना और नहाना आदि वर्जित है। नियम पालन के बाद पुजारी पुनः मृतक के परिवार में जाकर पूजा करता है और बालों की चोटी को खोल देता है। इस संस्कार में गाए जाने वाले गीत इस प्रकार है–

ओ लोबो...!
लौट आओ अपनी बिलखती संतानों के पास
तुम्हारे अपने तुम्हें बुला रहे हैं
अपनी दुनिया में वापस लौट आओ
रिश्ते–नाते सब तुम्हारा इंतजार कर रहें हैं
अब घर लौट कर आओ
अशुद्ध और अपवित्र आत्मा इन बच्चों का पीछा न करे
तुम वापस लौट आओ...।

'कापयीङ कापमाङ': इस समुदाय में किसी भी जानवर का शिकार करने के बाद शिकारी उद्वारा उस जानवर का नाम ले लेकर, सर पटक–पटक कर रोने का ढोंग करने का चलन है। इस रिवाज का पालन पशु–पक्षियों के मालिक 'कोमबो सारबो' को धोखा देने के लिए किया जाता है। उनकी मान्यता है कि ऐसा नहीं करने से 'कोमबो सारबो' क्रोधित होकर शिकारी और उसके परिवार वालों को परेशान करता है। कभी–कभी जान भी ले लेता है। इसलिए शिकारी जानवरों के शिकार करने के बाद जानवर की लाश के सामने बैठकर सर पटकते हुए फूट–फूटकर रोता है। विशेष रूप में किसी बाघ से सामना होने पर मजबूरी में जब उस बाघ को मारना पड़ता है। बोकार समुदाय के लोग बाघ और शेर आदि का शिकार नहीं करते हैं बल्कि घर से निकलने से पहले इनसे सामना न हो इसके लिए वे वन देवता की पूजा करते हैं, परंतु कभी कभार इनसे सामना हो जाता है और आत्मरक्षा के लिए इन्हें मारना पड़ता है। मारने के बाद पश्चताप के रूप में शिकारी को बिलख–बिलख कर रोना पड़ता है। उदाहरण के लिए गीत प्रस्तुत है जिनमें शिकारी हर एक शिकार का नाम ले लेकर रोता है–

आए के.../ओहो!
मैंने अपनी जरूरतों के लिए एक दुमबो (हिरण) को मारा
बदले में गाँव वालों के साथ मिलकर
मैं मदिरा, चावल, घी
और अच्छे सुगंध वाली अदरक आपको भेंट में दूंगा
मेरी आत्मा को इस जंगल में भटकने न देना
हे मालिक !
मुझे सही सलामत घर लौटने देना
मैंने अदरक और खुशबूदार चावल आदि से
वन को शुद्ध कर दिया है
मुझे इस हिरण को गाँव ले जाने दो
वे मेरे लौटने का इंतज़ार कर रहे होंगे

इसके अलावा इस समुदाय के लोगों की यह भी मान्यता है कि जब घर के पुरुष शिकार के लिए जाता है, तब घर में झाड़ू नहीं लगाना चाहिए। इस मान्यता का पालन नहीं करने से भी दुर्घटना घटित होती है।

निष्कर्ष: उक्त अध्ययन का विश्लेषण करने पर यह ज्ञात होता है कि बोकार समुदाय के जन जीवन की आधारशिला उनकी परम्पराएं हैं। मुख्य धारा से दूर जंगलों और पहाड़ों में निवास करने वाली बोकार जनजाति आज भी अपनी सांस्कृतिक विलक्षणता के साथ जीवन यापन करती है।

संदर्भ ग्रंथ

1. जमातिया, डॉ. मिलन रानी, कौशल डॉ. जय, त्रिपुरा के गॅरिया लोकगीत, अमन प्रकाश कानपुर, 2018
2. अंसारी डॉ. परवीन निजाम, लोक साहित्य के विविध आयाम, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी, 2016
3. गुप्ता रमणीका, पूर्वोत्तर आदिवासी सृजन मिथक एवं लोक–कथाएँ, (संपा), एन. बी. टी., दिल्ली 2010
4. लिली, रीबा तुम्बम, 'कताम', अरुणाचल प्रदेश की जनजातियों की लोककथाएँ, अनुज्ञा बुक्स, संस्करण 1, 2020 सं. अग्रवाल, डॉ. गिरिराजशरण, शोध दिशा, अंक दृ 60 दृ 1, 60 दृ 2, 60 दृ 3, 60 दृ 4, 60 दृ 5, बिजनौर, उत्तर प्रदेश, 2022
5. सं. झा, डॉ. किरण, भाषा, अंक दृ 313, वर्ष– 63 केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, नईदिल्ली, 2024
6. सं. अग्रवाल, डॉ. गिरिराज शरण, शोध दिशा, अंक दृ 60 दृ 1, 60 दृ 2, 60 दृ 3, 60 दृ 4, 60 दृ 5, बिजनौर, उत्तर प्रदेश, 2022
7. सं. चौबे, डॉ. चंद्रशेखर, समन्वय पूर्वोत्तर, खंड दृ 5, अंक दृ 3, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा, 2021, खंड दृ अंक दृ 1, 2022
8. च्ंजदंपा ै.ड., 'छलपइन ।हवउ'रू जीम ैबतमक स्वतम व ि।कप व ि।तनदंबींस च्तंकमी, टवस. 36, छव. 1/2, प्दकपंद ।दजीतवचवसवहपबंस ेवबपंजपवद, 2006